गोपाल दासराय निन्नय पाद
ना पॊंदिदेनॊ निश्चय॥ प॥
ई पीडिसुव त्रयतापगळ्ऒडिसि
कै पिडिदेÀन्न कापाडिद गुरुराय ॥अ.प॥

घोर व्याधियनॆ नोडि | विजयराय
भूरि करुणव माडि
तोरिदरिवरॆ उद्धारकरॆंदंदि
नारभ्य तव पाद सारिदॆ सलहॆंदु ॥
सूरिजन संप्रीय सुगुणोदार
दुरुळन दोष निचयव
दूरगैसि दयांबुनिधॆ नि
वारिसदॆ करपिडिदु करुणदि
अप मृत्युयवनु तंदॆ ऎन्नॊळगिद्द ॥1॥
अपराधगळ मरॆदॆ
चपल चित्तनिगॊलिदु विपुल मतियनित्तु
निपुणनॆंदॆनिसिदॆ तपसिगळिंदलि
कृपण वत्सल निन्न करुणॆगॆ
उपमॆगाणॆनॊ संततवु का
श्यपियॊळगॆ बुधरिंद जगदा
धिपन किंकरनॆनिसि मॆरॆयुव ॥2॥
ऎन्न पालिसिदंददि सकल प्र
पन्नर सलहॊ मोदि
अन्यरिगीपरि बिन्नप गैयॆ ज
गन्नाथ विठलन सन्नुतिसुव धीर ॥
निन्न नंबिद जनरिगॆल्लिय
बन्नवो भक्तानु कंपिश
रण्य बंदॆनॊ ई समयदिअ
हर्निशि ध्यानिसुवॆ निन्ननु ॥3॥